

चिरु जीवें चारों तेरे लाल अवधेश महाराज—जी ।  
बढ़े तेरा इकबाल अवधेश महाराज जी ॥  
रघुकुल सरोवर में कमल खिले देखो कमल खिले  
जिनकी सुगंध चारों ओर फैले चारों ओर फैले  
भए गुर ईश्वर कृपालु अवधेश महाराज जी ॥  
निर्गुण सगुण भए रूप अनूप भए रूप अनूप  
तेरे घर आए हैं बालक सरूप बालक सरूप  
जांकी है महिमा विशाल अवधेश महाराज जी ॥  
मन लोचनो के चकोर शशि रघुवर चकोर शशि रघुवर  
मधुर मराल है शिव मानस सर शिव मानस सर  
दर्पण से उज्ज्वलु हैं गाल अवधेश महाराज जी ॥  
गरीबि श्री खण्ड के प्राण जीवन धन प्राण जीवन धन  
साकेत स्वामी श्री राम शाम घन राम शाम घन  
रसिकनि प्राण प्रतिपाल अवधेश महाराज जी ॥